।। ओ३म्।।

कण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। – आर्यसमाज का तीसरा नियम

वर्ष ३१, अंक १६ एक प्रति : २ रुपये

सोमवार ५ मई, २००८ से ११ मई, २००८ तक

विक्रमी सम्वत् २०६५ दयानन्दाब्द : १८५

सष्टि सम्वत् १६६०८५३१०६ वार्षिक : १५० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल: aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com

सन् 1857 की क्रान्ति के प्रणेता स्वामी विरजानन्द एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती

– *कीर्ति शर्मा*

अधिकांश लोग इस बात से परिचित नहीं हैं कि १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के सूत्रधार एवं संगठनकर्ता चार वैदिक धर्म के प्रचारक संन्यासी थे। प्रथम स्वामी ओमानन्द, दूसरे इनके शिष्य स्वामी पूर्णानन्द, तथा तीसरे स्वामी विरजानन्द (आयु ७६ वर्ष), तथा चतुर्थ स्वामी दयानन्द सरस्वती (आयु ३३ वर्ष)। स्वामी दयानन्द सरस्वती आर्यसमाज के संस्थापक एवं स्वामी विरजानन्द जी के शिष्य थे। उपरोक्त महान् योगियों ने अपने विचारों तथा बैरकपुर (कलकत्ता) तक सभी सेना की यूनिटों में पहुंच गए। दूसरा चिह्न रोटी को रखा गया। यह रोटी एक गांव से दूसरे गांव तक पहुंचाई जाती थी, जिसका अर्थ माना गया कि सारा गांव आन्दोलन में भाग लेने के लिए सहमत हैं। कई मास तक यह प्रक्रिया पूरे देश में चलती रही तथा लाखों लोग आजादी की लड़ाई में हिस्सा लेने के लिए तैयार हो गए। सभा में स्वामी ओमानन्द जी ने कहा " अपना बाला साहिब मराठा, रूपगोबाबू, मौलाना अजीमुल्ला, रामजान बेग, नाना साहिब पेशवा और अन्य प्रतिष्ठित लोग उपस्थित थे। नाना साहिब पेशवा एवं फिरोजशाह ने साधु संगठन को आर्थिक सहायता के रूप में ५ हजार रुपये की राशि भेंट की।

दूसरी बहद् सभा ५ अक्तूबर, १८५५ को गढ़गंगा के मेले के दौरान स्वामी पूर्णानन्द जी की अध्यक्षता में हुई। इस सभा के उपाध्यक्ष सैय्यद फरुख दीन अपने भाषण में कहा कि " अपने राष्ट्र को विदेशियों के हाथों में न सौंपकर रखें। वे राजा नहीं अपितु डाकू व लुटेरे हैं, जिनका उद्‌देश्य केवल भारत की सम्पदा को लूटना है। वे सारे भारत के जन–जन के शत्रु हैं और हर वर्ग का खून चूसना चाहते हैं। इनसे सावधान रहने की आवश्यकता है अन्यथा वे पूरी जाति का विनाश करके हमारी मातभूमि को हड़प लेंगे। इन विदेशियों को इस देश से उखाड़ फैंकना ही हमारा मुख्य कर्त्तव्य एवं धर्म है।"

शिक्षा का प्रचार कर २००० साधुओं और सन्तों को संगठित किया तथा संयुक्त रूप से इन्हीं साधु–सन्तों के द्वारा सम्पूर्ण भारत में स्वतन्त्रता की चेतना जनमानस में जागत की गई। इस संगठन में अनेक समुदायों के लोग सम्मिलित थे। इस संगठन के सदस्यों ने सैनिक छावनियों, मेले, उत्सवों, क्रान्तिकारियों के बीच तथा तीर्थ स्थानों पर जाकर आजादी के संदेश को जन साधारण में पहुंचाया। ये सभी गुप्त ढंग से लोगों के मन में आजादी के लिए संघर्ष करने की कामना पैदा करते थे। इतना ही नहीं अपितु ब्रिटिश सैनिक कार्यवाही की जानकारी प्राप्त कर उसके प्रतिरोध की योजना भी बनाते तथा सुरक्षा का कार्य करते। स्वामी ओमानन्द ने १८५५ मे हरिद्वार की सभा में उद्‌बोधन दिया। उन्होंने स्वामी पूर्णानन्द तथा अन्य साधुओं के साथ स्वतन्त्रता आन्दोलन हेतु दो चिह्नों को चुना, जिसमें कमल का फूल उन सैनिकों में वितरित किया गया जो आन्दोलन में साथ देने को तैयार थे। एक यूनिट का सैनिक कमल को दूसरे यूनिट को देगा। यही प्रक्रिया निरन्तर चलती रहेगी। इसकी स्वीकति का अर्थ माना जाएगा कि उस यूनिट के सैनिक स्वतन्त्रता की लड़ाई में शामिल हैं। इस योजना के अन्तर्गत हज़ारों कमल के फूल पेशावर से लेकर

इस विषय पर निरन्तर खोज चल रही है। – सम्पादक

आत्मसम्मान ऊंचा रखें। परमात्मा पर विश्वास करें। अपनी मातभूमि का प्रत्येक नागरिक अपना भाई और बहिन है। स्वतन्त्रता के लिए तैयार रहें।" इस सभा में बहादुरशाह जफर (अन्तिम मुगल बादशाह) के बड़े पुत्र फिरोजशाह, (जो दिल्ली न्यायालय के अत्यन्त प्रतिष्ठित व्यक्ति) थे। लगभग २५०० लोगों ने इस सभा में भाग लिया। इस अवसर पर कई भाषण ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध धार्मिक एवं राजनैतिक विषयों को लेकर हुए। स्वामी पूर्णानन्द ने

तीसरी सभा ११ अक्तूबर, १८५५ को हरिद्वार की पहाड़ियों में पुनः स्वामी पूर्णानन्द जी की अध्यक्षता में हुई। इसमें ५६५ साधुओं ने भाग लिया, जिसमे १६५ मुस्लिम तथा ३७० हिन्दू धर्म को मानने वाले थे। इस सभा में स्वामी विरजानन्द और स्वामी दयानन्द सरस्वती भी शामिल थे। सर्वखाप के सरकारी रिकार्डर और सन्देशवाहक मीर मुश्ताक भी उपस्थित थे। जाट समुदाय के मोहन लाल जाट, सेना प्रमुख शेष राम जाट, उप प्रमुख भगवत गूजर तथा पण्डित शोभाराम भी सभा में उपस्थित थे। इस सभा में सैय्यद फखरुद्दीन एवं स्वामी पूर्णानन्द ने अपने विचार रखे।

स्वामी पूर्णानन्द ने न केवल धर्म रक्षा और कर्त्तव्य की बात की अपितु राष्ट्र के उत्थान के विभिन्न माध्यमों का भी उल्लेख किया।

इसी सभा में स्वामी दयानन्द भी उपस्थित थे जिनका पूर्व नाम शुद्ध चैतन्य था। स्वामी पूर्णानन्द से ही स्वामी दयानन्द ने संन्यास ग्रहण किया तथा स्वामी पूर्णानन्द जी ने ही स्वामी दयानन्द को वैदिक ग्रन्थों की शिक्षा के लिए स्वामी विरजानन्द के पास भेजा था। सन् १८५६ में स्वामी विरजानन्द जी की अध्यक्षता में स्वतन्त्रता आन्दोलन के मुख्य नेता उपस्थित हुए। स्वामी विरजानन्द ने अपने उद्‌बोधन में पहले परमात्मा का धन्यवाद किया और कहा कि –

– शेष पष्ठ २ पर

'सत्यार्थ प्रकाश' केस के सम्बन्ध में निवेदन

सभा कार्यालय को जानकारी मिली है कि कुछ लोग 'सत्यार्थ प्रकाश' केस के सम्बन्ध में भ्रान्तियां फैला रहे हैं। आर्यजन ऐसे लोगों से सावधान रहें। सत्यार्थ प्रकाश केस के सम्बन्ध की गई कार्यवाहियों, कार्यों ता इससे सम्बन्धित किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए **सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी से मो० : 09826655117** अथवा आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान **श्री धर्मपाल आर्य जी से मो० : 9810061763** पर सम्पर्क करें।

यहां यह भी स्पष्ट करना अत्यावश्यक है कि सभा की ओर इसके लिए धन आदि की कोई भी अपील जारी नहीं की गई है। – विनय आर्य, महामन्त्री

आर्यसमाज के नियमों की व्याख्या

पहला नियम

।। सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, ...।।

— प्रो० रत्नसिंह

गतांक से आगे :-

सत्यविद्या कहते हैं ब्रह्मविद्या को। इसी को पदार्थविद्या भी कहते हैं। पदार्थविद्या का अर्थ है सष्टि विद्या सम्बन्धी विद्या। यही भौतिक विज्ञान है। इसी को अपरा विद्या कहते हैं।

यह अर्थ दोषपूर्ण है। इसमें कई आपत्तियां हैं। **प्रथम आपत्ति** तो यह है कि ईश्वर अपना स्वयं का तथा जीव व प्रकति का निमित्तकारण नहीं है।

द्वितीय आपत्ति यह है कि तीसरे नियम में आता है कि :—

'वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। यदि सत्यविद्या का अर्थ ब्रह्मविद्या है तो क्या वेद में पदार्थविद्या नहीं है? तीसरे नियम में सत्यविद्या नहीं बल्कि सत्यविद्याओं लिखा है। इस अवस्था में सत्य—विद्या का अर्थ केवल ब्रह्मविद्या कैसे किया जाएगा? अतः इस नियम का जो अर्थ हमने पहले किया है, वही ठीक है।

जैसा कि हम प्राक्कथन में लिख चुके हैं कि आर्यसमाज के दस नियमों का आधार वेद हैं, यहां प्रमाणपत्र में इस नियम के आधार पर वेदमंत्र उद्धत किये जाते हैं :— **ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोध्यजायत।**

अर्थ :- ऋतं यथार्थ सर्व विद्याधिकरणं वेदशास्त्रम्।। *(यथार्थ सब विद्या का खजाना वेदशास्त्र)*

सत्यं—त्रिगुणात्मक प्रकति जिसका नाम अव्यक्त, सत्, प्रधान है जो स्थूल व सूक्ष्म जगत् का कारण है। (अर्थात् प्रकति) वह भी (अध्यजायत) कार्यरूप में प्रकट हुई। भावार्थ यह है कि ईश्वर ने वेद की रचना की और कार्यजगत् को प्रकति से उत्पन्न किया।

तस्माद्यात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छदासि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।

— *यजुः० अ०३१, मं.७*

यस्माद्टचो अपातक्षत् यजुर्य स्मादपाकषन्। सामानि यस्य लोमाण्यथर्वाडिंगरसो मुखम। स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः।।

अर्थ :- जो सर्वशक्तिमान् परमेश्वर है उसी से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद ये चारों उत्पन्न हुए है।

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधर पथिवीं यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

— *यजुः० १३/४*

अर्थ :- जो (हिरण्यगर्भः) स्व प्रकाशस्वरूप और जिसने प्रकाश करने हारे सूर्य—चंद्रमादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किए हैं जो (भूतस्य) उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का (जातः) प्रसिद्ध (प्रतिः) स्वामी (एकः) एक ही चेतनस्वरूप (आसीत्) था, जो (अग्रे) सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व (समवर्त्तत) वर्त्तमान था (सः) जो (इमाम्) इस (पथिवीम्) भूमि (द्याम्) सूर्यादि को (दाधार) धारण कर रहा है। हम लोग उस (कस्मै) ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अतिप्रेम से (विधेम) विशेष भक्ति किया करें।

इस नियम से यह तो सर्वथा स्पष्ट ही है कि आर्यसमाज एक ईश्वर विश्वासी समाज है। स्वभावतः प्रश्न होता है कि वह ईश्वर कौन है? उसका क्या स्वरूप है? इसका उत्तर अगले नियम में दिया गया है।

क्रमशः

आर्यसमाज के नियम व्याख्या

प्रथम पृष्ठ का शेष

सन् 1857 की क्रान्ति के प्रणेता .....

स्वाधीनता ही व्यक्ति व राष्ट्र की मौलिक सम्पत्ति है तथा परतन्त्रता शाप एवं लज्जा की बात है। स्वराज्य विदेशी राज से सौ गुणा अच्छा है। पराधीनता स्वाभिमान पर भारी आघात है। हमारे मन में किसी समुदाय तथा देश के लिए घणा नहीं है। हम ईश्वर इनमें कुछ अच्छाइयां भी हैं परन्तु वक्त आने पर इन अच्छाइयों को किनारे रखकर ये अपनी क्रूरता पूर्ण गतिविधियों को ही अपनाते हैं। विदेशी हमारी मातभूमि को केवल भोग विलास की भूमि समझते हैं। यहां के बच्चों से लेकर बूढ़े तक को अपने घर के पालतू बनाया। स्वामी रूद्रसेन ने सूचित किया कि कुछ स्वतन्त्रता संग्राम के नेता चंडी मन्दिर पहुंच रहे हैं। तीन दिन बाद पांच अन्जान व्यक्ति स्वामी दयानन्द जी को मिलने पहुंचे। स्वामी जी को अपना परिचय इन पांचों ने दिया — धोनधूपंत, बाला साहिब, उन्हीं का सर्वोपरि है जो अपना शरीर किसी अच्छे उद्देश्य के लिए त्याग देवें। ऐसे लोग मरते नहीं; अपितु सदैव जीवित रहते हैं। आप अपनी तलवार उठाएं और इन विदेशियों को उत्साह के साथ खदेड़ दें।"

एक सप्ताह उपरान्त नाना साहिब

से उनके लिए शुभकामना करते हैं; परन्तु ये क्रूर एवं दुष्ट लोग हमारे देश के राजाओं को अपमानित कर हम पर जबरन राज्य कर रहे हैं। भारतीयों के साथ पशुओं जैसा व्यवहार करना इनकी प्रवत्ति बन गई है। ईश्वर की दष्टि में सभी मनुष्य समान हैं; परन्तु ये विदेशी यहां के लोगों को बराबर न समझकर 'दास' का व्यवहार करते हैं। किसी भी धार्मिक ग्रन्थ में मनुष्य का मनुष्य के प्रति बुरा व्यवहार हो, ऐसा नहीं लिखा। परन्तु ये विदेशी, हमारे लोगों को पीड़ित एवं प्रताड़ित करने में सुख की अनुभूति करते हैं। कुत्ते से भी बदतर समझते हैं। ये हमारे संसाधनों को लूटकर अपने देश को मजबूत बनाना चाहते हैं। इस देश से इन्हें कोई प्रेम नहीं; अपितु हर तरह से इसे खोखला करने में जुटे हुए हैं। इसलिए मेरा आग्रह है कि प्रत्येक भारतीय राष्ट्रभक्त बनकर इसकी रक्षा करे। सभी एक दूसरे से भाई–भाई जैसा व्यवहार करें। सभी लोग जो इस देश में रहते हैं आपस में भाई–बन्धु हैं। उपरोक्त उद्घोष ने लोगों के मन में ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति प्रतिशोध की अग्नि को प्रज्वलित कर दिया और विदेशी शासन के विरोध में संघर्ष करने की इच्छा जागत की। स्वामी विरजानन्द ने नारा दिया :– *"राज बदलो क्रान्ति" अर्थात् स्वतन्त्रता संग्राम।*

स्वामी दयानन्द सरस्वती पूर्णरूप से स्वतन्त्रता आन्दोलन से जुड़े हुए थे तथा प्रत्येक गतिविधि की जानकारी रखते थे। मई १८५६ को स्वामी जी नाना साहिब पेशवा के घर कानपुर मिलने गए। चार–पांच मास तक इलाहाबाद और कानपुर के बीच उनका आना जाना लगा रहा। वर्ष १८५६ मे स्वामी दयानन्द हरिद्वार पहुंचे। उन्होंने अपना निवास चंडी का मन्दिर नील पर्वत पर अजीमुल्ला खां, तात्यां टोपे, कुवंर सिंह, राजा जगदीशपुर। परिचय उपरान्त बैठक में स्वामी जी ने इन नेताओं से स्वतन्त्रता आन्दोलन के बारे में देर तक बातचीत की। सभी ने स्वामी जी से साधु संगठन का नेतत्व करने की प्रार्थना की। उन्होंने बताया कि समस्त राजा पेशावर से लेकर कलकत्ता और कनार्टक तक पूर्ण रूप से तैयार हैं। परन्तु साधु समाज का कार्य अभी पूरा नहीं हुआ।

कुछ समय पश्चात रानी लक्ष्मीबाई, राजा गोविन्द राय ने भी स्वामी जी से सम्पर्क किया। दोनों ने अपनी व्यथा व्यक्त की। रानी लक्ष्मी बाई ने अंग्रेजों की आक्रमण की योजना स्वामी जी को बताई तथा कहा कि मैं अपनी झांसी के लिए अन्तिम क्षण तक लडूंगी और बलिदान देने के लिए तत्पर रहूंगी। उसने स्वामी जी से आशीर्वाद मांगा। स्वामी जी ने आशीर्वाद देते हुए कहा "यह शरीर नश्वर है, जीवन

पेशवा भी स्वामी जी को पुनः मिले तथा आन्दोलन की नवीनतम जानकारी दी। स्वामी दयानन्द जी ने नाना साहिब को २८३५ रुपये स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए दिए। इसमें ११०१ रुपये झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने दिए थे, जो और बाकी के रुपये अन्य स्रोतों से प्राप्त हुए थे। स्वामी जी ने उनसे कहा "लोगों का नेतत्व करना तथा आग से खेलना दोनों ही खतरनाक है। छोटी सी भूल सब कुछ नष्ट कर सकती है। अतः अत्यन्त सावधानी की आवश्यकता है। स्वतन्त्रता संघर्ष की अग्नि किसी भी कीमत पर जलाए रखना तथा अन्तिम लक्ष्य स्वतन्त्र राष्ट्र प्राप्त करने के लिए सम्पूर्ण समर्पण होना अनिवार्य हे। स्वामी दयानन्द जी ने पूर्ण शक्ति और प्रयास से साधुओं को संगठित कर राष्ट्र जागरण का ऐसा कार्य किया, जिसकी ज्वाला सतत् जलती रही। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास में कहा है ***"कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है।"***

– प्रधान, आर्यसमाज करोल बाग, नई दिल्ली-११०००५

इतिहास के इन पन्नों पर बहुत लोगों ने अपनी-अपनी टिप्पणिया दी हैं। प्रस्तुत लेख में लेखक के इन विचारों का स्रोत मुख्य रूप से इन्टानेट पर उपलब्ध जानकारियां हैं।

इस विषय में अन्य लेखों-प्रतिलेखों का हम स्वागत करेंगे। - सम्पादक

परम पिता परमात्मा की अमर वाणी
विश्व का प्राचीनतम धार्मिक ग्रन्थ

वेद

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य, वेदों के प्रकाण्ड पण्डित महर्षि दयानन्द व अन्य विद्वानों द्वारा किया गया
सम्पूर्ण मंत्रों सहित (10 भागों में)
हर घर में हो वेद जिससे आये खुशहाली

आर्य प्रकाशन

814, कुण्डेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली-6
दूरभाष : 011-23233280, 23213280, 09868244958

वर चाहिए

शुद्ध शाकाहारी, वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत, आर्य कन्या, कद 5 फुट 2 इंच, रंग गोरा, 22 वर्षीय पोस्ट ग्रेज्युण्ट अग्रवाल के लिए योग्य सेवारत/व्यवसायी आर्य वर की आवश्यकता है। इच्छुक आर्य परिवार निम्न पते पर सम्पर्क करें :-

मन्त्री, आर्यसमाज कैराना, जिला मुज्जफरनगर (उ०प्र०)
दूरभाष : 09837773024

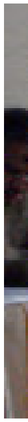

हरिद्वार में यति मंडल के साथ स्वामी अग्निवेश का छल

अत्यन्त लज्जा का विषय है कि भारत द्रोही पादरियों की गुरु मदर टेरेसा के गीत गा–गाकर सार्वदेशिक पर बलात् कब्जा जमाए हुए स्वामी अग्निवेश ने बैशाखी के पावन पर्व पर हरिद्वार में एकत्रित हुए आर्य संन्यासी वानप्रस्थी तथा ब्रह्मचारियों से विश्वास घात किया।

आर्य यति मंडल के भूतपूर्व अध्यक्ष स्वामी सुमेधानन्द जी को छल से प्रधान पद पर आसीन करके विभिन्न स्थानों से साधना हेतु एकत्रित हुए यतियों को यह कहा गया कि "क्योंकि आर्य यति मंडल (पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी वाले) का वैदिक विरक्त मंडल में विलय हो गया है। अतः भविष्य में स्वामी सुमेधानन्द जी की अध्यक्षता में बनाए गए इस नीवन संगठन को ही अपना सहयोग प्रदान करें। यह वैदिक विरक्त मंडल ही आर्यसमाज के विवादों तथा सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग का समाधान करेगा। खेद का विषय है कि यह सारा षड़यन्त्र स्वामी अग्निवेश द्वारा अपने आपको सार्वदेशिक सभा का प्रधान बनाए रखने हेतु आर्यसमाज के साधुओं का समर्थन प्राप्त करने के लिए ही किया गया था।

इस विचित्र वैदिक विरक्त मंडल की सूचना से मुझे पहले ही किसी डाक या फोन द्वारा कोई सूचना नहीं दी गई थी। उन्होंने वहां पहुंचते ही दो प्रश्न किए। पहला – **"आर्य विरक्तों का एक आर्य यति मंडल पहले ही चल रहा है, जिसकी कल १२ अप्रैल, ०८ को बैठक स्वामी सर्वदानन्द जी के आश्रम दीनानगर में है। अतः उसके होते यह कैसे मान लिया जाए कि उसका इसमें विलय हो गया है?"** बड़े संक्षेप में स्वामी अग्निवेश जी के एक पक्ष संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने उत्तर दिया कि उसके विलय का हैदराबाद में प्रस्ताव पारित हो गया था। उत्तर गलत व छल भरा था। क्योंकि यदि ऐसा होता तो फिर यति मंडल की दीनानगर में बैठक क्यों होती? हमारा संश्य उस समय सत्य सिद्ध हुआ, जब अगले दिन १२ अप्रैल, ०८ को दैनिक भास्कर में अग्निवेश द्वारा दी गई विज्ञप्ति में स्वामी सुमेधानन्द जी के नाम को हटाकर प्रधान स्वामी दिव्यानन्द (स्वामी अग्निवेश के पुराने साथी), मन्त्री श्री आर्यवेश (भूतपूर्व जगवीर सिंह एडवाकेट), कोषाध्यक्ष प्रणवानन्द (गुरुकुल गौतमनगर) के नाम दिए गए।

आचार्य आर्यनेरश जी का दूसरा प्रश्न वहां के अधिकारियों से यह था कि एक ओर तो हम प्रचारकों पर सत्यार्थ प्रकाश के १४वें समुल्लास का बनाने के स्थान पर विदेशी हमलावर कातिल बाबर ढांचे के समर्थन में मुसलमानों का साथ दिया था। क्या ऐसी स्थिति में स्वामी अग्निवेश जैसे विवादास्पद व्यक्ति द्वारा सत्यार्थ प्रकाश की ईमानदारी से रक्षा की जा सकती है? जो व्यक्ति स्वयं मुसलमान मौलवियों और भारत को मुस्लिम देश बनाने वाले आतंकवादी जिहादी मुसलमानों का समर्थक है ! क्या उस पर दयानन्द के भक्त आर्यसाधुओं को कभी विश्वास करना चाहिए? क्या ऐसे दोगले मुस्लिम नीति पोषक व्यक्ति से सत्यार्थ प्रकाश को कभी न्याय मिल सकता है? सभा के अन्त तक इस प्रश्न का उत्तर वहां बैठे हुए ना तो स्वामी अग्निवेश ने दिया ना ही उनके साथियों ने। अपने सार्वदेशिक प्रधान पद को स्थिर करने वाले षड़यन्त्र को व्यवहारिक रूप देने हेतु अग्निवेश ने सभा के अन्त में लुभावने प्रवचन में कहा – ***"हम सत्यार्थ प्रकाश आक्षेप करने वाले मुसलमानों से समझौता करेंगे।"***

अन्त में पुनः वहां के अधिकारियों के न चाहते हुए भी आचार्य आर्य नरेश जी ने कहा कि उन मुसलमानों से समझौता करने की कोई आवश्यकता नहीं। सत्यार्थ प्रकाश का एक–एक शब्द सत्य है और १४वें समुल्लास में कही गई बातें सप्रमाण सत्य सिद्ध हैं। केवल ऋषि दयानन्द की नहीं अपितु भारत सरकार के जज श्री जेड० एस० लोहाट, जज श्री चतुर्वेदी जी, श्री आर० पी० भसीन एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट पहले ही कुरान को गैर मुसलमानों का कत्ल करवाने का (आर्य खालसा हिन्दुओं) का कत्ल करवाने वाली भड़काऊ पुस्तक मान चुके हैं।

इन सब बातों को ध्यान में रखकर मुसलमानों से कुरान के नाम पर कोई समझौता न करके उसकी सच्चाई को संसार के समक्ष रखने का यह एक अच्छा अवसर प्राप्त हुआ है। जिस कुरान के कारण भारत तथा विश्व में बेगुनाहों का प्रतिदिन कत्लेआम हो रहा है, बच्चों के साथ चरित्रहीनता हो रही है, जगत् जननी मातशक्ति को थोक के भाव में घरों में रखकर अपमानित किया जा रहा है एवं पाकिस्तान ले लेने पर भी कुरानिक जिहाद से मुस्लिम आतंकियों द्वारा सम्पूर्ण भारत को इस्लामिक देश बनाने हेतु खूनी दंगे हो रहेहैं। उसकी वास्तविकता को जनता के समक्ष रखने का यह अच्छा अवसर है। धन व पद लोभी नेताओं को भी इससे यह पता चल जाएगा कि कुरान, इस्लाम और मोहम्मद साहब के साथ–साथ महर्षि दयानन्द का भी नाम अमर होगा।

– ***स्वामी सुप्रेरणानन्द सरस्वती***

विशेष षड़यन्त्र की गन्ध आ रही थी, क्योंकि जो लोग स्वामी अग्निवेश के निर्देश पर मंचस्थ थे, वे उनके अपने विशेष सहयोगी तथा साथी थे। समय निकालकर इस बैठक में अचानक आचार्य आर्य नरेश जी पहुंचे, जिसे प्रचार करने पर वारण्ट प्रसारित होते हैं और दूसरी ओर स्वामी अग्निवेश अपने साथ सदा एक मुसलमान मौलवी को रखते हैं। यह भी सबको विदित है है कि स्वामी अग्निवेश ने श्री रामजन्म भूमि अयोध्या को आर्य श्री राम स्मारक

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर

2 जून से 15 जून, 2008

स्थान : गुरुकुल झज्जर (हरयाणा)

प्रवेश शुल्क : शाखानायक 200/– रुपये उप व्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक : 250/– रुपये
व्यायामाचार्य, शास्त्राचार्य, नियुद्धाचार्य : 300/– रु0 बौद्धिक शिक्षक, प्राथमिक चिकित्सक : 300/– रु0

शिविर में पधारने वाले आर्यवीर अपने प्रान्तीय संचालक/आर्यसमाज के अधिकारी का संस्तुतिपत्र अवश्य साथ लाए।

–: निवेदक :–

आचार्य विजयपाल (शिविर संयोजक) राजेन्द्र विद्यालंकार (महामन्त्री) स्वामी देवव्रत (प्रधान संचालक)
9416055044 9416026571 9868620631

बोध कथा

हमारा विचित्र रोग

– महात्मा आनन्द स्वामी

एक मनोरंजक घटना याद आई। कुछ वर्ष पूर्व की बात है। पंजाब में एक मन्त्री थे। उनकी दो स्त्रियाँ थी। पंजाब असेम्बली की दो देवियों ने उन पर आक्षेप किया कि वे भारतीय मर्यादा के विरुद्ध कर रहे हैं। भगवान राम का नाम भी लेते हैं और एक साथ घर में दो–दो स्त्रियां भी बिठाते हैं, जबकि भगवान् राम ने सीतराम के वनवास के समय भी दूसरा विवाह नहीं किया था।

ये मन्त्री महोदय थे बहुत प्रत्युत्पन्न मति (हाजिरजवाब)। जल्दी से बोले – "आप राम का नाम लेती हो। उनके पिता का नाम भी तो लो ! उनके यहां तीन पत्नियां थीं। मेरे यहां दो केवल दो हैं।"

यह है हमारा–आपका रोग ! हम यह तो चाहते हैं कि दूसरे लोग राम बनें, परन्तु स्वयं दशरथ बनाना चाहते हैं। वह भी पत्नियों के विषय में, और विषयों में नहीं। ❑

ब्रह्म–सूत्र द्वितीय अध्याय - प्रथम पादः (31)

– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'

विकरणत्वान्नेति चेचदुक्तम् ।।३१।।

अर्थ :- (विकरणत्वात्) करण अर्थात् इन्द्रियों आदि से रहित होने के कारण (न) ब्रह्म जगत् का कर्त्ता नहीं है (इति चेत्) यदि ऐसा कहो तो (तत्) वह (उक्तम्) पूर्व कहा जा चुका है अर्थात् उसका समाधान किया जा चुका है।

भावार्थ :- यदि कोई कहे कि इन्द्रियों आदि से रहित होने के कारण ब्रह्म में जगत की रचना करने की शक्ति नहीं है ते इसका उत्तर इसके पूर्व के सूत्र (सर्वोवेता चतद्दर्शनात्) में दिया जा चुका है। जीवात्मा अपने सभी कार्य इन्द्रियों आदि के सहारे से करता है और ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करता है। बहदारण्यक उपनिषद् (३.८.८) में याज्ञवल्क्य ने गार्गी से कहा– हे गार्गी। ब्रह्मज्ञानी बताते हैं कि वह अक्षर, अविनाशी, अपरिणामी ब्रह्म चक्षु, वाणी आदि इन्द्रियों से रहित है उसकी तो– **''विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतस्यात्''** (पुरूष सूक्त) सर्वत्र आँखे, हाथ और पैर हैं। श्वेताश्वतर उपनिषद् (६/८) में कहा है कि ''न तस्य कार्य करणंच विद्यते'' उस ब्रह्म का कोई कार्य (शरीर) है और नहीं इन्द्रियाँ आदि कारण हैं। वह इंद्रियों आदि कारणों से रहित होते हुए भी सर्वशक्ति सम्पन्न है। कग्वेदादि के पुरूष सूक्त (१०/६०/१) में उसे '' सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्ष''' कहा है। अर्थात् वह सभी प्रकार की शक्तियों का स्रोत है। इसी को श्वेताश्वतर उपनिषद् (३/१६) में कहा कि वह ''अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्चतयक्षुः से श्रणोत्यकर्णः'' अर्थात् वह हाथ -पैर वाला तो नहीं है; परन्तु इनके बिना ही वह सर्वत्र व्याप्त है और सबको पकड़े हुए यानी धारण किए हुए है। वह बिना आँख व कान के देखता व सुनता है। इससे स्पष्ट है, कि वह इन्द्रियों के सारे काम बिना इन्द्रियों के करता है।

– शिष्य प्रश्न करता है कि संसार में कोई भी व्यक्ति बिना प्रयोजन के किसी नाम में प्रवत्त नहीं होता। ब्रह्म जगत् की रचना के महान् कार्य वह किस प्रयोजन से करता है? वह तो आप्त काम है। उसके प्रयोजन की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती। क्योंकि बिना प्रयोजन के किसी काम में प्रवत्ति न होने से उसे जगत् का कर्ता नहीं मानना चाहिए। आचार्य सूत्रकार ने शिष्य की शंका को अगले सूत्र में प्रस्तुत किया है।

– सी-२ए/६० जनकपुरी, नई दिल्ली-५८

Question & Answer

Ignorance - The cause of failure of Vedic culture

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. - **Editor**

The questions are answered by Swami Ramswarup ji.

Q. : Despite the fact, everybody, here in India, swears by the Vedas, which declare - na tasya pratima asti, idol worship is all pervasive; it is sickening. Has the Rishi's mission failed? **C. K. Vatsa**

Ans.: If the crops are left uncared for, then weeds, wild grass and bushes overshadow the real crops. Similarly, when clouds cover the sun, darkness prevails. It does not mean that there is no sunlight. In olden days light of Vedas (Truth told by rishis) was followed everywhere. No body created any hindrances in spreading the true knowledge of Vedas. The down fall of Vedic knowledge and culture started before the Mahabharata. After Mahabharata RISHIS were not contacted for dissemination of Vedic knowledge. Thus, the true knowledge of Vedas was spread and it was left as uncared for crop or hidden sun. Ignorant people started their own different paths as observed by Tulsi Dasa in Ramayana (Uttarakhand).

"SHRUTI SAMMAT HARI BHAKTI PATH SANJUT BIRATI BIBEK. TEHIN NA CHALHIN NAR MOH BAS, KALPANHIN PANTH ANEK."

MEANING — TULSI STATES THAT THERE IS AN ETERNAL WORSHIP BASED ON VEDAS, WHICH GIVES US ASCETISM AND FACTUAL KNOWLEDGE. BUT THE PEOPLE ARE NOT FOLLOWING THE PATH OF VEDAS DUE TO ATTACHMENT (ATTACHMENT WITH MATERIALISTIC, POMP AND SHOW AND FAMILY ETC.) AND THE PEOPLE MAKE THEIR OWN

योगः कर्मसु कौशलम्

- डॉ० अजय कुमार पाठकः

गतांक से आगे :-

अपि च, **'प्रभुणा सह सम्बन्धो जीवानां योग उच्यते' इति।**

योगस्य महत्त्वं श्रीमद्भगवद्गीतायां स्थाने–स्थाने च नारायणेनोक्तम् –

योग युक्तो विशु(त्मा विजित्मान जितेन्द्रियः।
सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते।। ५/७)

अपि च,

प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम्।
उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम्। (६/२७)

भारतीयचिकित्साशास्त्रे महर्षि चरकः कथयति यत– **सेन्द्रियचेतनद्रव्यं निरिन्द्रियमचेतनम्।** केनापि ऋषिणा इदमुक्तम् – **'नास्ति योगात्परं बलम्, नास्ति योगात् परो बन्धुः।'**

योगाभ्यासेन आलस्यत्यागः, आत्मबलस्य विस्तारः, बौद्धिकविकासः, आत्मोन्नतिः, लोलुपत्वस्य नाशः आत्मतत्त्वस्य साक्षात्कारः इत्यादयः सुफलाः प्राप्यन्ते। दष्टव्याः कतिश्चिद्श्लोकरः श्वेताश्वतरोपनिषद्ः द्वितीयशध्यायस्य –

–: क्रमशः :–

साभार : संस्कत मंजरी, जुलाई-सितम्बर, २००७

सरल सत्यार्थ प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश के प्रणयन की १२५ वीं वर्षगांठ पर आयोजित सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के अवसर पर लगभग सभी वक्ताओं ने कहा कि प्रत्येक भारतीय को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना चाहिए। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु हमने वैदिक विद्वान श्री सत्यकाम वर्मा जी की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश सन्देश से जो अत्यन्त सरल भाषा में लिखी गई है एक-एक समुल्लास आर्य संदेश में प्रकाशित करने का निश्चय किया है। आशा है इसे पढ़कर प्रत्येक भारतीय प्रेरणा लेगा और अन्यों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रेरित करेगा। सभी आर्य समाजों से निवेदन है कि वे एक-एक समुल्लास के प्रकाशन पर पत्रक के माध्यम से इसका प्रचार-प्रसार करे जिससे सत्यार्थ प्रकाश का सन्देश घर-घर में जाए और इसकी सुगन्धि चहुं ओर फैले। - सम्पादक

NEW SEVERAL PATHS OF WORSHIP.

Now, the situation is uncontrolled. The eternal knowledge of Vedas which emanates direct from God, has now been covered by illusion. Therefore, Rishis have not failed. Those who are indulged in the path which is against Vedas, have failed to attain peace or realization of God inspite of man-made worship. God is formless. He is omni present. He pervailes all. Rishis Mission has not failed. Ignorants have failed. God is truth and Vedas, the knowledge of God, are true.

Q.: I have 2 daughters name Manisha and Karishma. Can you tell the meaning of their name? **kanisa**

Ans. : My blessings to you. Muni is he who studies Vedas and controls his senses, perceptions. Similarly, Manisha means she, who is learned of Ved mantras. Karishma is an urdu word which means "Miracle/ Wonderful/supernatural power. **To be continued...**

आर्यवीरांगना दल दिल्ली प्रदेश

चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षण शिविर

१८ मई से २५ मई, २००८

स्थान : दयानन्द मॉडल स्कूल, विवेक विहार दिल्ली-३२

उद्घाटन : १८ मई,०८ सायं ५ बजे **समापन** : २५ मई २००८

शिविर में जहां कन्याओं को बौद्धिक विकास के साथ–साथ शारीरिक उन्नति हेतु योगासन, कराटे, शस्त्र संचालन, हस्तकला, संगीत, भाषण एवं विशेष रूप से व्यक्तित्व विकास के सूत्र भी सिखाए जाते हैं।

शिविर शुल्क १५०/- रु० प्रति शिविरार्थी

अपने क्षेत्र की अधिक से अधिक कन्याओं को शिविर में अवश्य भेजकर नवयुवतियों को भारतवर्ष की श्रेष्ठ नागरिक बनने का अवसर प्रदान करें।

-: निवेदक :-

ब्र. सुमेधा आर्या	वीणा आर्या	विभा आर्या
संरक्षिका	संचालिका	मन्त्री
६८१८७०३२२५	६८६१२८४२५६	६८७३०५४३६८

एकादश समुल्लास : विविध भारतीय मतमतान्तर

गतांक से आगे :-

दूसरी ओर वेद के प्रति अज्ञान और अनास्था का ही परिणाम था कि 'वेदांत' के नाम पर उलटे–सीधे मत प्रचारित किये जाने लगे। वास्तव में शंकराचार्य परम वेदविद् थे। उन्होंने जैनियों और बौद्धों द्वारा फैलाए जा रहे अनीश्वरवाद का मुकाबला करने के लिए उन दोनों से सर्वथा विपरीत सिद्धान्त चला कर जनता को वेदमत की ओर पुनः आकष्ट करने के लिए 'ब्रह्म' को ही एकमात्र सत्य घोषित किया था। ये दोनों मतवादी जिस जीवात्मा और प्रकति को सत्य कहते थे, उन्हें उन्होंने 'ब्रह्म' की तुलना में 'मिथ्या' घोषित किया। उनकी कदाचित कामना यही थी कि एक बार भारत–भूमि, से इन अवैदिक विचारों का सर्वथा नाश कर देने के बाद वह 'ब्रह्म' को सर्वोपरि चरम सत्य बताकर, जीवन और प्रकति के अपेक्षाकत पराश्रित रूप को वैदिक ढंग से समझायेंगे। किन्तु उन्हें जीवन के बहुत थोड़े वर्ष ही मिल पाए। इस पर भी भारत के चारों कोनों में उन्होंने अपनी विजय पताका गाड़कर वेदों का नाद 'चार मठों' की स्थापना के साथ गुंजा दिया। परन्तु उनकी मत्यु के बाद उनके अभिप्राय को न समझकर उनके अनुयायियों ने अपनी गद्दी को ही सुरक्षित रखना लक्ष्य मान लिया। परिणामतः शंकर के वचनों की व्याख्या के नाम पर नए–नए मत अद्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद, विशिष्टता–द्वैतवाद आदि के नाम से चल पड़े। ये सब भ्रम और अज्ञान के कारण चले। अन्यथा शंकर तोबादरायण व्यास के ब्रह्म सूत्रों' की सच्ची व्याख्या ही करना चााहते थे?

भस्म, रूद्राक्ष, छापा, तिलक आदि चिन्हों का प्रचलन भी ऐसे ही अज्ञान के कारण हुआ। ये सब ढोंग हैं, सत्य नहीं। मूर्तिपूजा के सम्बन्ध में यह बात और जाननी चाहिए कि यदि यदि मंत्रों से पाषाण की मूर्ति में देवता आ बसते हैं, तब वह भी चेतनता से युक्त क्यों नहीं जाती, यह बात वेदविहित न होने से मूर्ति–पूजा करना अधर्म ही ठहरता है। चारवाक आदि मतों में जो परमात्मा को न मानकर संसार में भोगवत्ति की बात कही जाती है, वह भी अज्ञान के ही कारण है। वास्तव में वे लोग 'प्रत्यक्ष' प्रमाण का अर्थ सही न मानने के कारण ही भ्रमों में पड़ जाते हैं। अन्यथा अनादि और अनन्त परमात्मा और जीव के पथक्–पथक् क्षेत्र और स्वरूप को जानकर ऐसी बातें न कहते, जिन्हें मानकर अज्ञानी मनुष्य अनाचार की राह पर बढ़ता है। न ही वे तब पुनर्जन्म आदि का विरोध करते।

—: क्रमशः :—

साभार : सत्यार्थ प्रकाश सन्देश

सार्वदेशिक सभा की एकता : आओ फिर से विचारें

पहले के एकता प्रयासों की विफलता के लिए जिम्मेदार कारणों को अवश्य जानें।

एकता के सार्थक प्रयासों का हमेशा स्वागत करेंगे बशर्ते प्रयास तर्कसंगत भी हों

जब से सार्वदेशिक सभा कार्यालय आसफ अली रोड, नई दिल्ली पर कब्जा हुआ है, तब से एकता–एकता–एकता की बात बहुत अधिक जोर पकड़ गई। हैरानी की बात यह है कि जिन लोगों ने सारी व्यवस्थाओं को धता बताकर पुलिस प्रशासन का सहयोग लेकर, बाहुबलियों का सहारा लेकर जबरन कब्जा किया तथा अपने आपको चुनी हुई वैध कार्यकारिणी बताने का प्रयत्न किया, वे ही लोग आज अनर्गल प्रलाप करके यह दर्शाना चाह रहे हैं कि एकता के प्रबल समर्थक तो वे ही हैं बाकी अन्य कोई नहीं। इस सम्बन्ध में आर्यसन्देश में एक श्रृंखला चलाई गई थी, जिसका शीर्षक था ***"सार्वदेशिक सभा एकता प्रकरण – कौन रहा बाधक"***। उसमें आज तक एकता के लिए हुए सभी गम्भीर प्रयासों का तथा उनकी सफलता की कहानी और कारण बताने का विस्तार से प्रयत्न किया गया था। आज पुनः उस विस्तार की आवश्यकता नहीं है। किन्तु संक्षेप में कुछ मुद्दों पर विचार तो अवश्य करना पड़ेगा। विशेष कर उन लोगों को जो इससे सीधे–सीधे जुड़े हैं अथवा इस विषय में अपने विचार रखते हैं। अस्तु !

28 फरवरी, 2005 के तुरन्त पश्चात् एकता के प्रस्ताव आने प्रारम्भ हो गए – सशर्त प्रस्ताव। मकसद केवल प्रस्ताव रखना लगा, उसे निभाना नहीं। ताकि केवल जनता को लगे कि देखो हम तो एकता चाहते हैं। उस समय भी संन्यासी महानुभावों ने अपना कर्त्तव्य निभाते हुए एकता के काफी प्रस्ताव रखे। इस सम्बन्ध में एक घटना का जिक्र अत्यन्त महत्वपूर्ण होगा। जून, 2005 में स्वामी सुमेधानन्द (चम्बा) वैदिक यति मंडल के प्रधान थे। यति मंडल की बैठक रोहतक में सम्पन्न हुई; बैठक में सार्वदेशिक प्रकरण पर लम्बा विचार–विमर्श हुआ। विस्तृत विचारोपरान्त निर्णय लिया गया कि इस समस्या को शीघ्र समाप्त किया जाए और दोनों पक्षों को (उस समय दो ही पक्ष थे) वैदिक यति मंडल की ओर से पत्र लिख दिया जाए कि दोनों अपना–अपना अधिकार वैदिक यति मंडल को सौंप दें और अपने को प्रधान कहना भी छोड़ दें और वैदिक यति मंडल सार्वदेशिक सभा के नए चुनाव सम्पन्न कराएगा। इस आशय का पत्र स्वामी सुमेधानन्द जी ने कै0 देवरत्न आर्य जी को भी भेजा और स्वामी अग्निवेश जी को भी। कै0 देवरत्न आर्य जी ने तुरन्त उस पत्र का स्वामी सुमेधानन्द जी को उत्तर लिख भेजा, जिसका आशय यह था कि यति मंडल के विचारों से पूर्णतः सहमत हूं तथा आर्यसमाज के संगठन के हित में अपने समस्त अधिकार यति मंडल को सौंपने के लिए तैयार हूं। साथ ही अपना त्याग पत्र भी संलग्न करके स्वामी जी के पास भेज दिया। साथ ही यह भी लिखा गया कि इस त्याग पत्र का तब ही प्रयोग करेंजब स्वामी अग्निवेश जी का भी त्याग पत्र आपके पास पहुंच जावे।

स्वामी अग्निवेश जी से स्वामी सुमेधानन्द जी को क्या उत्तर में मिला लिखित या फोन पर; इसकी जानकारी तो उन्हें ही होगी। किन्तु यह प्रक्रिया आगे बिल्कुल नहीं बढ़ी। इस आधार पर हम केवल अनुमान लगा सकते हैं कि स्वामी अग्निवेश जी का उत्तर पूर्णतया नकारात्मक रहा होगा। आज जब स्वामी अग्निवेश विरक्त मंडल की बात करते हैं, तो उस घटना को स्मरण करके आज के प्रकरण हास्यास्पद दीखता है। । इसके पश्चात् जब कैप्टन देवरत्न आर्य जी ने वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी को पत्र लिखकर विद्वानों एवं सन्यासियों की एक समिति बनाकर उसे चुनाव के लिए अधिकृत करने की बात कही थी, तब उसी पत्र को आधार बनाकर तीसरे पक्ष का सृजन हुआ था। श्री विमल वधावन बहुत समय से कै0 देवरत्न आर्य को उनके पद से पदच्युत करने के लिए प्रयासरत थे। उन्होंने इस पत्र को आधार बनाकर न्याय सभा के माध्यम से कै0 देवरत्न आर्य को अपने पद से पदच्युत करने का असफल प्रयास किया। और दूसरी ओर स्वामी अग्निवेश और उनके सहयोगियों ने पत्र में उल्लिखित विद्वानों और संन्यासियों को बिका हुआ विद्वान बताया और वैदिक सार्वदेशिक में लिखे लेख में कहा कि इन बिके हुए विद्वानों पर कैसे भरोसा करके सार्वदेशिक के चुनावों की नैया इन पर छोड़ी जा सकती है। श्री वेद प्रकाश श्रोत्रीय जी को लिखे पत्र की प्रति आर्यसन्देश में भी प्रकाशित की गई थी। यदि आज भी उस पत्र की किसी को आवश्यकता हो तो वह सभा को aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करके प्राप्त कर सकते हैं।

इन सब कारणों से यह प्रक्रिया भी यहां समाप्त हो गई। डॉ0 राजेन्द्र विद्यालंकार जी द्वारा कुरुक्षेत्र में आरम्भ की गई प्रक्रिया भी कुछ ऐसे ही कारणो से समाप्त हुई। उसमें भी आचार्य विशुद्धानन्द, स्वामी जगदीश्वरानन्द, राजेन्द्र जिज्ञासु जी आदि लेखकों की एक समिति बनाने का प्रस्ताव था जोकि सार्वदेशिक सभा के नए चुनाव सम्पन्न करा सकें।

– शेष पष्ठ ६ पर

आर्यसन्देश – द्वितीय अंक : अनुकरणीय कार्य

श्रीमती पुष्पा जुल्का

शनिवार ११ दिसम्बर, ०७ को सवेरे टेलिफोन पर समाचार मिला कि श्रीमती पुष्पा जुल्का इस संसार को छोड़ गई हैं। इस दुखःद समाचार ने पिछले ६० वर्ष के अन्तराल को पष्ठ दर पष्ठ सामने ला खड़ा किया। मैं उन्हें बहिन जी कह कर सम्बोधित किया करती थी, उन्होंने मुझे कक्षा ६ से कक्षा १० तक गणित पढ़ाया था। उस गणित की शिक्षा के साथ उनके व्यक्तित्व का प्रभाव अधिक पड़ा जिसने मेरे आचार व्यवहार पर काफी कुछ असर छोड़ा। आप रघुमल आर्य कन्या विद्यालय में मेरी अध्यापिका रहीं।

बहिन जी को ईश्वर ने पारखी दष्टि दी थी, वे एक ही मुलाकात में व्यक्ति को टोह लिया करती थीं, जिसमें जो गुण होता उसे उभार लेतीं और उसके अनुकूल उससे कुछ न कुछ सीख लेती और जो साथी किसी प्रकार से न्यून होता उसे अपना इतना आत्मीय बना लेती कि वह उनका सहारा लेकर चमक उठता। ऐसा ही उन्होंने रघुमल विद्यालय में पढ़ाते समय गणित विभाग की अध्यापिकाओं के समूह से बरता। लगभग आठ–नौ अध्यापिकाओं के समूह को ऐसा गठित किया हुआ था कि क्या जूनियर, क्या सीनियर सभी अध्यापिकाएं गणित के विषय को इस कुशलता के साथ पढ़ाती थीं कि हर छात्रा विषय को खूब अच्छी तरह समझ जाती थी। परिणामतः गणित का परिणाम लगभग १०० प्रतिशत रहता था।

बहिन जी को पढ़ाने के साथ–साथ सेवा में भी आनन्द आता था। आपने स्काउटिंग और गर्ल्स गाइड में प्रशिक्षण प्राप्त किया था। विद्यालय की समय सारिणी में तो कोई घण्टा स्काउटिंग के लिए नहीं दिया जाता था, यह काम वे स्कूल के समय के बाद छात्राओं को दिया करती। गर्ल्स गाइड की पूरी ट्रेनिंग देने के बाद छात्राओं की परीक्षा होती और उन्हें प्रशिक्षण में सफल होने पर प्रमाण पत्र से कई छात्राओं को सम्मान मिला। १९६५ में भारत–पाक सीमा के युद्ध में जो घायल जवान नई दिल्ली स्टेशन पर आए उन्हें मिलने और उनकी सेवा के लिए अपनी गाइड्स का जत्था लकर गई। वहां एक घायल जवान ने कहा– "माँ जी आप अंगूर लाई हैं, क्या मौसमी भी है। बस अगले दिन प्रार्थना सभा में अपील की कि मेरे घायल बच्चों के लिए सब एक–एक मौसमी लाये? आश्चर्य यह कि इतनी मौसमी इकट्ठी हुई कि छः टैक्सी भर–भर कर मौसमी स्टेशन पहुंची और वहां उनका रस निकाल कर वीर सपूतों को गाइड्स ने पिलाया।

बहिन जी हर किसी जरूरतमंद की जरूरत पूरा करने का साहस रखती थीं। यहां तक कि अगर किसी छात्रों को कुछ पारिवारिक कष्टों के रहते पढ़ाई छोड़नी पड़ती तो वे उसके घर पहुंच जाती और छात्रों को पढ़ाने के सब इन्तजाम अपने ऊपर लेती। उन्हें हर लड़की-लड़के को साक्षर बनाना था शायद यही संकल्प उन्हें सड़क पर स्कूल चलाने के लिए प्रेरित करता रहा।

गर्मी–सर्दी में उनके हाथों में ऊन और सिलाईयां देख सकते थे। छोटे–बड़े स्वेटर बुनती रहतीं। पता नहीं कब कहां कोई सर्दी से ठिठुरता उन्हें दिख जाए बस झट अपने थैले से निकाल उसकी सर्दी से रक्षा करती। इसी प्रकार अपने घर से छोटे–बड़े कपड़ों से कईयों के तन ढ़कती रहतीं। जो कोई उनके पास चला गया उसका पेट भरना वह अपना कर्तव्य समझती थी। इतने प्रेम और आत्मीयता से उसकी आवभगत करती कि आगन्तुक उसे मां ही बना लेता था। आपने नारी के अधिकारों के प्रति बहुत काम किया। All India Women Welfare Assn. की आप वरिष्ठ सदस्य रहीं। आपने जहां समाज के लिए अपना तन–मन–धन लगाया वहीं अपने परिवार को बहुत ही उत्तम ढंग से पाला। आपके पति स्वर्गीय श्री जगदीश जुल्का ऑल इण्डिया–रेडियो में काम करते थे। कई बार उन्हें दिल्ली से बाहर भी भेज दिया जाता था। पर अपने चारों बच्चों की पढ़ाई का पूरा दायित्व बहिन जी ने ही निभाया। बड़ा बेटा प्रमोद डाक्टर, बना, अनिल इन्जीनियर, विमल आई. ए.एस. और पुत्री मधु ने भी एम.ए. किया। चारों बच्चों में मां के संस्कार भी उतनी ही गहराई से आये। प्रत्येक जन हर किसी की सहायता के लिए हर समय तत्पर रहता है।

आगे पौत्र, पौत्रियां, नातिने भी अपने स्तर पर खूब पढ़–लिखकर अच्छे पदों पर कार्यरत हैं। वे इतनी कुशल गहणी थीं कि सम्पूर्ण परिवार उनसे मार्ग–दर्शन लेता था। मेरे जैसे मालूम कितनों को उनसे प्रेरणाएं मिली और उनके साथ जुड़कर कुछ सीखने समझने का अवसर मिला। १९४७ से जो इस विद्यालय को कार्यक्षेत्र के रूप में अपनाया तो सेवा निवत्ति के बाद भी वह विद्यालय उनकी सेवाओं को लेता रहा। दिल्ली सरकार ने उन्हें Life Achievment Award देकर सम्मानित किया तो तत्कालीन मुख्य अध्यापिका ने विद्यालय में उनका सम्मान किया। उनकी सेवाओं को गिनना सूर्य को दीपक दिखाना है। ऐसे व्यक्तित्व कभी–कभी समाज को दिशा देने के लिए आते हैं। परमात्मा उनकी आत्मा को सद्गति देवे और उनका आशीर्वाद उनके परिवार और उनके साथियों को मिले।

– श्रीमती सत्यभामा खन्ना
५८ सेक्टर-ए, पाकेट-सी,
बसन्तकुंज, नई दिल्ली-

आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली के
वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में विशेष आयोजन

प्रायः प्रत्येक आर्यसमाज में वार्षिकोत्सव का आयोजन किया जाता है, परन्तु यदि हम उन कार्यक्रमों का मूल्यांकन करें तो निश्चित रूप से कोई बहुत बड़ी उपलब्धियां हांसिल होती नजर नहीं आतीं। इस बार आर्यसमाज कीर्ति नगर के अधिकारियों ने विशेष रूप से प्रचार करने की योजना तैयार की जिसमें मुख्य रूप से पार्कों में प्रचार का कार्यक्रम बनाया गया। रात्रिकथा को आर्यसमाज में आयोजित न करके कीर्तिनगर स्थित विभिन्न पार्कों को चुना गया। रोजाना एक पार्क में सायंकाल यज्ञ तथा उसके पश्चात् सुन्दर भजनों–प्रवचनों का कार्यक्रम रखा गया।प्रत्येक कथा के पश्चात् रात्रि भोजन की भी व्यवस्था थी। इनका सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि एक तो जिनके घर के निकट यह आयोजन होता, वे अपने सभी पड़ोसियों को तथा पारिवारिक मित्रों को भी उसमें आमन्त्रित करते वे लोग जो किन्हीं कारणों से आर्यसमाज के अन्दर होने वाली कथाओं में नहीं आ पाते थे उन्होंने भी बड़े धैर्य से प्रवचनों को न केवल सुना अपितु वैदिक साहित्य भी खरीदा। इस अवसर पर निःशुल्क साहित्य भी प्रत्येक आने वाले सज्जनों को दिया गया। नियमित रूप से आर्यवीर दल के कार्यकर्ता कार्यक्रम की सफलता हेतु जुटे रहे तथा आर्यसमाज के अधिकारियों ने मिलकर के इस कार्य को सफल बनाया। प्रत्येक कथा में रोजाना लगभग 400 की उपस्थिति रही। समापन समारोह रविवार के दिन आर्यसमाज में सम्पन्न हुआ, जिसमें भारी संख्या में आर्यजन उपस्थित थे। वेद कथा स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, कुरुक्षेत्र एवं भजन श्री नरेन्द्र आर्य जी, गुड़गांव के हुए।

– ***सतीश चड्ढा, मन्त्री***

(अन्य आर्यसमाजें भी अपने कार्यक्रमों को समाज की चार दिवारी से बाहर करने की योजना बनाएं ताकि हम जन–जन तक पहुंचने में सफल हो सकें। थोड़े से ही प्रयास से यह कार्य सफलता के साथ किया जा सकता है। सभा के वेद प्रचार वाहन का भी ऐसे उद्देश्य की प्राप्ति के लिए लाभ लिया जा सकता है। निकट भविष्य में पं0 नरेशदत्त जी के वेद प्रचार रथ द्वारा पूर्व की भांति प्रचार की योजना बनाई जा रही है,सभी आर्यसमाजें अपने यहां पर वेद प्रचार की तैयारियां आरम्भ करें। तिथियां बाद में घोषित की जाएंगी। – विनय आर्य, महामन्त्री)

एस0 एम0 आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, नई दिल्ली का
स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

पृष्ठ 5 का शेष

किन्तु इस प्रस्ताव की 'वैदिक सार्वदेशिक' में जिन शब्दों में हंसी उड़ाई गई वे शब्द लिखना भी कठिन हो जाता है। और भी कुछ प्रक्रियाएं चली; किन्तु हमेशा एकता का ढोंग करने वाले स्वामी अग्निवेश जी की ओर से उन सब प्रयासों को आघात ही लगा और उन्हें आगे नहीं बढ़ाया जा सका।

इस सम्बन्ध में एक अन्य महत्वपूर्ण बैठक मुम्बई के सान्ताक्रुज आर्यसमाज में सम्पन्न हुई। स्वामी धर्मानन्द जी (उड़ीसा) ने इस बैठक की अध्यक्षता की। स्वामी अग्निवेश, श्री मिठाई लाल सिंह और कै0 देवरत्न आर्य जी इस बैठक में उपस्थित थे। जब निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए विद्वानों की समिति को सौंपने की बात आई तब श्री मिठाई लाल जी की ओर से स्वामी धर्मानन्द जी के नाम की बात रखी गई। कैप्टन देवरत्न आर्य जी ने भी उसको स्वीकार कर लिया। पर तुरन्त उस बात को स्वामी आर्यवेश और स्वामी अग्निवेश ने काटा तथा यह कहा कि एक संन्यासी पर कैसे विश्वास कर लिया जाए, अब तो सब गुटों में बंट चुके हैं। और यह कहकर इस प्रस्ताव को नकार दिया। इन्हीं सब बातों को देखते हुए ही कै0 देवरत्न आर्य जी की अन्तरंग सभा ने इन विवादों का हल हमेशा के लिए करने हेतु कोर्ट द्वारा चुनाव कराने की बात उठाई थी। किन्तु उस पर स्वामी अग्निवेश और श्री मिठाईलाल जी क्यों नहीं सहमति दे पाए यह बात समझ से परे है और वास्तव में समझ से परे भी नहीं है। हमारा बड़ा स्पष्ट मानना है कि वैधानिक सभाओं के द्वारा भेजे गए प्रतिनिधियों को लेकर कोर्ट द्वारा नियुक्त अधिकारी की देख–रेख दिशा में सहमति बनाने से होगा। जो समिति गठित हो उसमें कोई भी व्यक्ति ऐसा न हो जो किसी प्रान्तीय सभा का प्रधान हो अथवा सक्रिय अधिकारी हो या तीनों ही पक्षों की (अब शायद दो रह गए हैं– वैसे यह स्पष्ट होना अभी शेष है) अन्तरंग सभा के सदस्य अथवा अधिकारी हों, तब ही उन पर निष्पक्ष चुनाव करा सकने का विश्वास हो पाएगा अन्यथा नहीं। वैसे हमारा मानना यह भी है कि यदि ऐसी कोई समिति तीनों पक्षो की सहमति से बना भी ली गई तो वह समिति जब प्रान्तीय सभा के प्रतिनिधियों को लेने का कार्य आरम्भ करेगी तब विवाद पुनः कोर्ट में जाने की सम्भावनाएं बढ़ जाएंगी। अतः बार–बार कोर्ट की शरण में जाने से लाख बेहतर होगा कि हाईकोर्ट द्वारा नियुक्त जज निष्पक्ष चुनाव कराकर इस प्रकरण को यहीं समाप्त कर दें। यदि प्रबुद्ध जन हमारी इस बात से सहमत हों अथवा कुछ और इस बात के सम्बन्ध में कहना चाहें, उनके विचार सादर आमन्त्रित हैं। वे भी अपने विचार दें।

कै0 देवरत्न आर्य जी ने अपनी नीति हर समय सुस्पष्ट रखने का प्रयास किया है और उसमें सबसे बड़ा कदम था, सार्वदेशिक सभा से सम्बन्ध प्रान्तीय सभाओं के प्रधान एवं मन्त्रियों की सूची घोषित करना और स्वामी अग्निवेश और श्री मिठाईलाल सिंह जी को यह कहना कि यदि यह सूची आपकी दृष्टि से ठीक नहीं है तो बताएं कि आपकी दृष्टि से प्रान्तीय सभाओं के कौन अधिकारी हैं। परन्तु बार–बार प्रकाशित करने के बावजूद स्वामी अग्निवेश जी का वैदिक सार्वदेशिक और श्री विमल वधावन जी का

एस0 एम0 आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग ने अपना स्थापना दिवस समारोह अत्यन्त उत्साहपूर्वक विद्यालय के प्रांगण मनाया। इस अवसर पर विद्यालय में लगे विशाल पंडाल में सभी विद्यार्थियों, उनके अभिभावकों, शिक्षकों, तथा आर्यजनों ने यज्ञ में भाग लिया।

यज्ञ के पश्चात् गत वर्ष की गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया तथा गत वर्ष की विभिन्न परीक्षाओं में उत्तम स्थान पाने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। समारोह में बच्चों ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन से सम्बन्धित अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। क्योंकि यह वर्ष स्वामी दयानन्द जी के निर्वाण के 125वें वर्ष के आयोजन के रूप में मनाया जा रहा है, अतएव इसकी छाप भी पूरे कार्यक्रम में दिखाई दी। विद्यालय के अध्यक्ष श्री राजीव आर्य जी ने बताया कि हमारे विद्यालय में अगले पूरे वर्ष विशेष रूप से स्वामी दयानन्द जी के बारे में बच्चों को अधिकतम जानकारी देने का प्रयास होगा, ताकि विद्यार्थी स्वामी दयानन्द से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को आगे बढ़ाने का संकल्प ले सकें।

– ***अरविन्द नागपाल, प्रबन्धक***

एम. एम. आर्य पब्लिक स्कूल के स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर विद्यायली बच्चों के साथ यज्ञ करते विद्यालय प्रधानचार्या, अध्यक्ष एवं प्रबन्धक। बच्चों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम का एक दृश्य।

में यदि चुनाव करा दिए जाएं तो ही एकता का मार्ग प्रशस्त हो सकता है क्योंकि वह मार्ग भविष्य में कोर्ट के दरवाजे खट–खटाने के लिए हर किसी को रोकेगा तथा उस अवस्था में भी यही मार्ग भी अन्तिम व उपयोगी है जब चुनाव कराने हेतु किसी एक नाम पर अथवा नामों के समूह पर सहमति न बन पा रही हो। सार्वदेशिक सभा के इस लम्बे चले विवाद का हल मात्र एकता के नारों से नहीं होगा, एकता के लिए वास्तविक और आवश्यक तथ्यों को जानते हुए समझते हुए और मानते हुए सही सार्वदेशिक साप्ताहिक (जिसका प्रकाशन फिलहाल बन्द है) ने एक बार भी इस विषय पर अपनी सही या गलत टिप्पणी नहीं दी, न ही अपने अनुसार प्रान्तीय सभाओं के वैध अधिकारियों की सूची प्रकाशित की। इसको क्या माना जाए?

वास्तविकता को सब जानते हैं। बार–बार बताने से बढ़ती नहीं; किन्तु जब इस प्रकार के कुछ घटनाक्रम होते हैं, जिनके बारे में लम्बे–चौड़े दावे किए जाएं और धरातल पर वे शून्य से भी कम महत्त्व रखते हों तो सच्चाई को पुनः बतलाना कभीकभी आवश्यक हो जाता है। काश! एकता के सम्बन्ध में जो बातें गत दिनों दीवानहाल, सार्वदेशिक सभा और एकता के सम्बन्ध में लिखी गई, कही गई और फैलाई गई सच होती। पर वास्तविकता यह है कि झाग के बुलबुलों की भी कुछ आयु होती है परन्तु इस प्रक्रिया की आयु तो उतनी भी नहीं थी। यह सुखद नहीं दुःखद ही है। ❖

आर्यसमाज बाजार सीताराम दिल्ली का ८८वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज बाजार सीताराम दिल्ली–०६ का ८८वां वार्षिकोत्सव दिनांक २१ अप्रैल से २७ अप्रैल, २००८ तक आर्यसमाज मन्दिर में समारोहपूर्वक मनाया गया, जिसमें प्रातःकाल आचार्य प्रियम्वदा जी वेद भारती (नजीबाबाद) के ब्रह्मत्व में सवालाख गायत्री महायज्ञ सम्पन्न किया गया। मन्त्र पाठ गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ की चार ब्रह्मचारिणियों द्वारा किया गया। रात्रि में आचार्या जी के वेद प्रवचन हुए और श्री नारायण सिंह जी शास्त्री ने अपनी सशक्त वाणी में भजनोपदेश किए।

२७ अप्रैल रविवार को सवा लाख गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् उत्सव का मुख्य कार्यक्रम आर्यसम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता के लिए पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी (बहादुरगढ़) पधारे थे।

– बाबू राम आर्य, मन्त्री

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्वावधान में २७वें वनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर

आर्यसमाज मंगोलपुरी का वार्षिकोत्सव

६ मई से ११ मई, २००८

स्थान : ओ ब्लाक - २५३ के साथ वाला पार्क (स्टेट बैंक के पीछे)

पूर्णाहुति एवं समापन समारोह

सायंकाल रविवार ११ मई, २००८

यज्ञ : यज्ञ ३ से ४ बजे

ब्रह्मा : आचार्य श्री आनन्द कुमार शास्त्री

सहयोगी : आचार्य श्री रघुवर शास्त्री

भजन : श्री देवेन्द्र शास्त्री

ध्वजारोहण : चौधरी सूबेसिंह सौखन्दा

अध्यक्षता : श्री भजन प्रकाश आर्य

मुख्य वक्ता : आचार्य भद्रकाम वर्णी, आचार्य धर्मपाल आर्य, श्री विनय आर्य

मुख्य अतिथि : कर्मयोगी एवं दानवीर महाशय श्री धर्मपाल जी (एम०डी०एच०)

आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

– विष्णुदेव गुप्ता, प्रधान
पं० रमेश चन्द, मन्त्री

आर्यसमाज बी ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली का ऋग्वेदीय यज्ञ पूर्णाहुति एवं वार्षिकोत्सवस

११ मई, २००८

समय : प्रातः ७.३० से १२.३० बजे

यज्ञ : प्रातः ६.३० से ८ बजे

ब्रह्मा : आचार्य डॉ० अरुण देव शर्मा

आर्यसमाज प्रशान्त विहार, दिल्ली के नव निर्मित हॉल का उद्घाटन सम्पन्न

आर्यसमाज प्रशान्त विहार दिल्ली के नवनिर्मित हाल का उद्घाटन समारोह हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ सायं 5 बजे यज्ञ के साथ हुआ, जिसके ब्रह्मा वैदिक विद्वान आचार्य श्री अखिलेश्वर जी और श्री शिवनारायण शास्त्री उपाचार्य थे। यज्ञोपरान्त श्री सुदर्शन मनचन्दा, कु0 नैनश्री प्रज्ञा एवं श्री योगेन्द्र शास्त्री जी ने अपने मधुर भजन प्रस्तुत किए।

समारोह में सभा प्रधान ब्र0 राजसिंह आर्य, निगम पार्षद श्री विजेन्द्र गुप्ता, एवं श्री प्रवेश वाही ने सम्मिलित होकर उपस्थित आर्यजनों को उद्बोधन दिया। रात्रि 8 बजे लाल रामगोपाल (समालखा वालों) के करकमलों से वैदिक मन्त्रोच्चार के बीच नवनिर्मित हॉल का उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर आचार्य अखिलेश्वर जी और लाला रामगोपाल जी को समाज की ओर से स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। मंच संचालन समाज मंत्री श्री दुर्गा प्रसाद कालरा ने किया।

– ओमप्रकाश भावल, प्रधान

आर्यसमाज सरस्वती विहार का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज सरस्वती विहार के वार्षिकोत्सव के अवसर पर वेद कथा 21 से 27 अप्रैल, 08 तक सम्पन्न हुई। आचार्य अखिलेश्वर जी के प्रवचन तथा श्रीमती सुदेश आर्या के सुन्दर सुमधुर भजन हुए। समापन किया। साथ ही श्री राजपाल सिंह शास्त्री (मधुर प्रकाशन), श्री राजीव आर्य (एस0एम0 आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग), श्रीमती सरला आर्या (यज्ञ वाली माताजी के नाम से मशहूर, रघु नगर), श्री राजेन्द्र दुर्गा (संयोजक,

१८ मई से १ जून, २००८

स्थान : आर्यसमाज मैन बाजार, रानी बाग, दिल्ली

उद्घाटन : १८ मई, रात्रि ८ बजे

समापन : १ जून, प्रातः ८ बजे

आप सब कार्यक्रमानुसार पधारकर शिविरार्थियों को अपना आशीर्वाद प्रदान करें। — ***वेदव्रत मेहता, प्रधान***
प्रेमलता शास्त्री, महामन्त्री

भजन : स्वामी उत्तमा यति, पं० जगमल एवं अन्य

प्रवचन :डॉ० कपिलदेव शर्मा वेदालंकार

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ उठाएं एवं कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

— ***डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया, प्रधान***
कष्णलाल कुमार, मन्त्री

वैदिक चैनल "विचार" की अब तक की प्रगति

१. प्रोमोटर

- ❖ २२ दिसम्बर — प्रोमोटरों की बैठक दिल्ली में सम्पन्न हुई जिसमें आगामी ६ महीनों की रूपरेखा निश्चित।
- ❖ ४२ प्रोमोटरों एवं २०० अन्य निवेशकों द्वारा कम्पनी की इक्विटी पूर्ण
- ❖ बोर्ड द्वारा कम्पनी की इक्विटी को १२५ प्रतिशत करने का निर्णय।
- ❖ मार्च में मुम्बई के प्रोमोटरों की बैठक सम्पन्न।
- ❖ सभी प्रोमोटरों की बैठक पुनः मई—जून में रखने का निर्णय।

२. कार्यक्रम निर्माण

- ❖ टेस्ट प्रोग्रेमिंग पर कार्य शुरु, मई के प्रथम पायलट प्रोग्रॉम आने की सम्भावना।
- ❖ इस सन्दर्भ में आर्यसमाज के लेखकों, विद्वानों, भजनोपदेशकों, कलाकारों आदि से सम्पर्क प्रारम्भ।

३. चैनल लाइसंस

- ❖ टी०वी० लायसंस आवेदन की प्रक्रिया लगभग पूर्ण।

अन्य जानकारी हेतु कम्पनी की वेबसाईट ***www.vichaar.tv*** देखें।

पीयूष आर्य, निदेशक,
विचार टेलिविजन नेटवर्क एंड मीडिया रिसर्च प्रा० लिमि०,
६५७, प्रथम तल, आदर्श नगर, लिंक रोड,
ओशीवाड़ा, अंधेरी (प०) मुम्बई - ४००१०२

समारोह दिनांक 27 अप्रैल, 08 को सम्पन्न हुआ जिसमें मुख्य रूप से माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट की ओर से विद्वानों तथा वेद वाणी विभाग), श्री सुनील गुप्ता जी (लॉ ऑफिसर, तिहाड़ जेल), श्री अजय सहगल (सम्पादक टंकारा समाचार), श्री ओमप्रकाश

कार्यकार्ताओं का सम्मान किया गया। ट्रस्ट के मैंनेजिंग ट्रस्टी श्री भजन प्रकाश आर्य जी ने वैदिक विद्वान् आचार्य डॉ0 महावीर मीमांसक जी को "वेद मार्तण्ड" के पुरस्कार से समानित रत्ता जी (प्रमुख कार्यकर्ता आर्यसमाज सैनिक विहार) को "यज्ञश्री" सम्मान से सम्मानित किया गया।

इस परम्परा को काफी लम्बे समय से संचालित करने वाले श्री भजन प्रकाश आर्य जी का भी आर्यसमाज सरस्वती विहार की ओर से विशेष सम्मान इस अवसर पर किया गया। आर्यसमाज की ओर से सम्मान करते समय आर्यसमाज के अधिकारियों ने श्री भजन प्रकाश जी को एक समर्पित जीवन बताया तथा उनके इस कार्य की बहुत प्रशंसा की कि उन्होंने विद्वानों और कार्यकर्ताओं को सम्मान देने की परम्परा प्रारम्भ की है। अधिकारियों ने माता कमला आर्या ट्रस्ट का इस कार्य के लिए विशेष रूप से धन्यवाद किया।

— ***ओम प्रकाश मनचन्दा, मन्त्री***

आर्यसमाज गुड़मंडी दिल्ली में नि:शुल्क योग प्राणायाम शिविर

६ मई से १० मई, २००८

स्थान : आर्यसमाज गुड़मुडी निकट ३३ ए, गुड़मंडी, दिल्ली-७

समय : प्रातः ६ से ७.३० बजे

प्रशिक्षण : श्रीमती शांता तनेजा

आप सब अधिकाधिक संख्या में शिविर में भाग लेकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करें।

— ***रामस्वरूप छाबड़ा, प्रधान***
वीरेन्द्र कुमार मन्त्री

साप्तहिक आर्य सन्देश

5 मई, 2008 से 11 मई, 2008

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि. नं० डी.एल. (एन.डी.) - ११/६०७१/२००६-२००८
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक ८/६–०५–२००८
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३६/२००६-०८
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में
आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में

विशाल आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर-०८

२४ मई से १ जून, २००८

स्थान : कुलाची हंसराज मॉडल स्कूल, अशोक विहार, फेज-३, दिल्ली-५२

उद्घाटन समारोह : शनिवार २४, मई, २००८
समापन एवं दीक्षान्त समारोह : रविवार १ जून, २००८
विशेष प्रशिक्षण : योग, आसन, प्राणायाम, संध्या, हवन, धर्मशिक्षा, शिष्टाचार, सैनिक शिक्षा, दण्ड बैठक, सर्वांग सुन्दर व्यायाम, कमाण्डो ट्रेनिंग, आत्मरक्षा, कराटे, लाठी, खेल।

आर्यवीरों से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारकर प्रशिक्षण प्राप्त करें। अधिक जानकारी के लिए – **आर्यसमाज मिण्टो रोड, नई दिल्ली-२, दूरभाष : २४५०४८६४, www.aryaveerdal.org** पर सम्पर्क करें।

-: निवेदक :-

वीरेन्द्र आर्य संचालक (9811130250) **अश्विनी आर्य** महामन्त्री (9868586720)

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य (चार भागों में)

सम्पूर्ण वेद-भाष्य का मूल्य 1800/- रुपये

प्राप्त करें मात्र 1200/- में

डाक-व्यय पृथक् से देय होगा।

प्राप्ति-स्थान : - वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001; दूरभाष : 011-23360150, 23343737

वार्षिक परीक्षाओं में सफल समस्त विद्यार्थियों एवं विद्यालयों को हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी कक्षा से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 20%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों को नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। आर्य विद्या परिषद् द्वारा प्रकाशित कराई गई नैतिक शिक्षा की ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 1
☎ : 23360150; Email : aryasabha@yahoo.com

आवश्यकता है

विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों में नैतिक शिक्षा एवं उनके स्तर के अनुरुप वेद तथा वैदिक सिद्धान्तों की जानकारी देने के लिए प्रत्येक कक्षा अनुरूप पाठ्यक्रम तैयार करने हेतु योजना बनाई गई है। इस प्रकार के पाठ्यक्रम को तैयार करने में रूचि रखने वाले महानुभावों की आवश्यकता है। आकर्षक वेतन/मानदेय योग्यतानुसार उचित प्रकार से दिया जाएगा। अवकाश प्राप्त अध्यापक/प्राध्यापक, लेखक आदि भी आवेदन कर सकते हैं। शीघ्र आवेदन करें। ईमेल द्वारा भी आवेदन भेजे जा सकते हैं। *– संयोजक,*

नैतिक शिक्षा विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१,
ईमेल : **aryasabha@yahoo.com**

आर्यसमाज डी ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज जनकपुरी डी ब्लाक का वार्षिकोत्सव समारोह दिनांक ३० अप्रैल से ४ मई, २००८ तक बड़े ही उत्साहपूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर यज्ञ श्री सोमदेव शास्त्री जी के ब्रह्ममत्व में हुआ। भजन श्रीमती सुदेश आर्या तथ प्रवचन आचार्य इन्द्रदेव जी के हुए।

समापन समारोह दिनांक ४ मई को आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री धर्म पाल आर्य जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य ने भी सभा सभा को सम्बोधित किया।

– दिनेश आहुजा, प्रधान
कर्मयोगी, मन्त्री

पुरोहित चाहिए

आर्यसमाज कैराना, जिला मुज्जफरनगर (उ०प्र०) को एक योग्य पुरोहित की आवश्यकता है। योग्यतानुसार दक्षिणा एवं आवास आदि की सुविधा निःशुल्क प्रदान की जाएगी। अपने समस्त प्रमाणपत्रों की प्रति संलग्न करते हुए आर्यसमाज कैराना के कार्यालाय से सम्पर्क करें।

प्रधान, आर्यसमाज कैराना, जिला मुज्जफरनगर (उ०प्र०)
दूरभाष : 01398-266446

सार्वदेशिक आर्यवीरांगना दल के तत्वावधान में

विशाल आर्यवीरांगना प्रशिक्षण शिविर

२५ मई से १ जून, २००८

स्थान : आर्ष गुरुकुल नोएडा, सैक्टर-३३, नोएडा (उ०प्र०)

प्रवेश शुल्क : 150/- रुपये प्रति वीरांगना

आर्यसमाजों में संचालित होने वाली प्रत्येक आर्य वीरांगना दल शाखा एवं आर्यसमाजो से निवेदन है कि अधिकाधिक आर्यवीरांगनाओं को इस शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु पंजीकरण कराएं।

-: निवेदक :-

स्वामी उत्तमायति	**मृदुला चौहान**	**अंजू बजाज**	**विमला मलिक**
प्रधान संचालिका	संचालिका	सचिव	कोषाध्यक्षा
9891125554	9810702760	51550176	25597794

दिल्ली सभा के "वैदिक प्रकाशन" की शानदार प्रस्तुति

दयानन्द लघुग्रन्थ संग्रह

(स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती द्वारा सम्पादित)

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित
गौकरुणानिधि, पंच महायज्ञविधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्यरत्नमाला एवं आर्याभिविनय का अद्भुत संग्रह

केवल मात्र २५/- रुपये

डाक से मंगाने पर डाक व्यय अतिरिक्ति देय होगा।

प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली– २ से छपवाकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान रोड नई दिल्ली-१; दूरभाष : २३३६०१५०; फैक्स २३३६५६५६; E-mail : aryasabha@yahoo.com** से प्रकाशित किया।

सम्पादक : **ब्र० राजसिंह आर्य** सह सम्पादक : **विनय आर्य** व्यवस्थापक : **सुशील महाजन** सह व्यवस्थापक : **डॉ० ओमप्रकाश भटनागर**